

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 6, रहस्योद्घाटन 2

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर डॉ. डेव मैथ्यूसन का पाठ्यक्रम है। सत्र 6, सात चर्च: पेर्गमम, थुआतिरा, और सरदीस।

तो, आइए पेर्गमम में चर्च के कुछ विवरणों पर नजर डालें जहां तक कि मसीह की पहचान या अध्याय एक से लेखक ने मसीह की किस विशेषता का जिक्र किया है, क्योंकि यह चर्च की स्थिति से संबंधित है।

चर्च की स्थिति क्या थी? समस्या या मुद्दा क्या था? और वह उन्हें अपने सन्देश के रूप में क्या बताता है? और फिर यदि वे विजय प्राप्त कर लेते हैं तो युगांतशास्त्रीय वादा क्या है? और फिर, हम इस पर थोड़ा गौर करेंगे कि उन्होंने प्रकाशितवाक्य को कैसे पढ़ा होगा, और शेष रहस्योद्घाटन, विशेष रूप से चार से 22 तक, उनकी स्थिति के लिए कैसे प्रासंगिक रहे होंगे। अध्याय दो, 12 से 17 में पेर्गमम का चर्च, उन चर्चों में से एक है जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों मूल्यांकन प्राप्त करता है, या हम प्रशंसा और निंदा शब्दों का उपयोग कर सकते हैं। पहले कुछ छंदों में ईसा मसीह को ऐसे चित्रित किया गया है जैसे उनके मुंह से तेज दोधारी तलवार निकल रही है।

और हमने देखा कि यह अध्याय एक में मसीह के वर्णन की विशेषताओं में से एक थी। और हमने कहा कि संभवतः उसके मुंह से निकली तलवार इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि रहस्योद्घाटन मुख्य रूप से प्रतीकवाद के माध्यम से कैसे संचार करता है। हम स्पष्ट रूप से इसे शाब्दिक रूप से नहीं ले रहे हैं, लेकिन मुंह से निकलने वाली तलवार वास्तव में एक पुराना प्रतीक है जो पुराने नियम में वापस जाता है और मसीह को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित करता है जो न्याय करता है, एक ऐसा व्यक्ति जो केवल शब्द बोलता है, जो उसके बारे में निर्णय जारी करता है लोग।

अब अध्याय एक से मसीह को इस दोधारी तलवार के रूप में चित्रित किया गया है जो उसके मुँह से निकलती है। दूसरे शब्दों में, मसीह अब मुख्य रूप से एक योद्धा के रूप में, मुख्य रूप से न्याय करने वाले के रूप में पेरगाम की कलीसिया में आता है। जब आप आगे बढ़ते हैं और पद 16 पढ़ते हैं, तो पेरगाम की कलीसिया को संदेश में कहा गया है, पश्चाताप करो, अन्यथा, मैं तुम्हारे पास आऊंगा और अपने मुँह की तलवार से तुम्हारे विरुद्ध लड़ूंगा।

इसलिए पेर्गमम का संदेश मुख्य रूप से नकारात्मक होगा। और तलवार के साथ मसीह का चित्रण इस बात का संकेत देता है, कि यदि वे जो कुछ भी कर रहे हैं उसके लिए पश्चाताप करने से इनकार करते हैं, तो वह मुख्य रूप से न्याय के लिए आ रहे हैं, जिसे हम बस एक क्षण में देखेंगे। सबसे पहले, पेरगामम के चर्च की सराहना करना महत्वपूर्ण है।

उनकी सराहना की जाती है क्योंकि वे काफी कठिन और शत्रुतापूर्ण वातावरण में रहते हैं। वास्तव में, जब आप श्लोक 13 से शुरू करते हैं, तो आप मसीह के वर्णन के बाद संदेश शुरू करते हैं। यीशु ने जॉन के माध्यम से चर्च से कहा, मैं जानता हूँ कि तुम कहां रहते हो, शैतान का सिंहासन कहां है।

अब शैतान का सिंहासन क्या है, इसके बारे में बहुत सी अटकलें चल रही हैं। सबसे आम सुझाव यह है कि यह ज़ीउस की वेदी का संदर्भ रहा होगा, जो पेरगामम द्वारा मनाए जाने वाले प्राथमिक और प्रमुख देवताओं में से एक है। और वह वेदी जो शहर में विशिष्ट थी, जॉन के दिमाग में थी जब वह यह लिखता है या जब वह चर्च को यीशु से यह संदेश देता है, कि शैतान का सिंहासन ज़ीउस की वेदी का संदर्भ या संकेत रहा होगा।

अबीमेलेक या अन्य मंदिरों या देवताओं के स्मारकों और पेरगामम में ऐसी चीजों का उल्लेख हो सकता है, जैसे अन्य सिंहासनों के संबंध में वास्तव में कई अन्य स्पष्टीकरण हैं। सबसे पहले, मुझे यकीन नहीं है कि हम वास्तव में निश्चित हो सकते हैं कि यह किससे मेल खाता होगा या क्या जॉन के पास ज़ीउस की वेदी जैसी कोई विशिष्ट इकाई थी। वास्तव में, मुझे संदेह होगा कि जॉन के पास किसी भी चीज़ का कोई विशिष्ट संदर्भ नहीं है और शैतान का सिंहासन केवल भगवान के सिंहासन के विपरीत है जिससे उसने हमें पहले अध्याय में परिचित कराया है।

तो शैतान के सिंहासन का सीधा सा मतलब है कि यह शैतान का क्षेत्र है। शैतान इस पर शासन करता है यह उसका क्षेत्र है जिस पर उसका नियंत्रण है। और फिर, इस प्रकार वह परिचय देता है जो हम प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 में पढ़ेंगे।

हमने कहा कि चर्चों को भेजे गए संदेशों में अध्याय 4 से 22 की घटनाओं का भी संदर्भ है। इसलिए 4 से 22 ठीक उसी चीज़ का एक प्रतीकात्मक सर्वनाशी चित्रण है जो जॉन 2 और 3 में कर रहा है। और अध्याय 12 में, हम पुनः उसका परिचय ड्रैगन, शैतान से हुआ, जो परमेश्वर के लोगों को धोखा देने और उन पर अत्याचार करने के लिए आता है। हम पेरगामम के संदेश में अध्याय 2 में पहले से ही ऐसा होते हुए देखते हैं।

तो फिर, मुझे लगता है कि शैतान के सिंहासन की तुलना शायद ज़ीउस की वेदी या किसी अन्य चीज़ से नहीं की जानी चाहिए। लेकिन फिर, शायद यह जॉन का यह कहने का एक और रूपक तरीका है कि यह शैतान का क्षेत्र है। यह वह जगह है जहां शैतान इस शहर में, पेरगामम शहर में शासन करता है।

और इसलिए ईसाई स्वयं को काफी कठिन और शत्रुतापूर्ण वातावरण में पाते हैं। फिर भी निंदा, और प्रशंसा, हमें याद दिलाती है कि उन्होंने इसका सामना करते हुए वास्तव में अपनी वफादार गवाही बरकरार रखी है। तो जाहिर तौर पर यहां, कम से कम और बड़े पैमाने पर, चर्च ने यीशु मसीह के व्यक्तित्व के लिए अपनी गवाही बनाए रखी है, यहां तक कि ऐसे माहौल में भी जहां शैतान का सिंहासन है, शैतान शासन करता है, और शैतान धोखा देने में सक्षम है।

वास्तव में, जॉन हमें बताता है, यह वह संदेश है जहां जॉन हमें बताता है कि इस माहौल में कम से कम एक व्यक्ति अपने विश्वास के लिए मर गया है। और वह एंटीपास नाम का एक आदमी है।

और यह एकमात्र व्यक्ति है जिसके बारे में जॉन ने विशेष रूप से हमें बताया है कि वह मर गया है।

वह हमें यह नहीं बताता कि दूसरों के पास है या नहीं। लेकिन जब आप प्रकाशितवाक्य पढ़ते हैं, खासकर जब आप अध्याय 4 से 22 तक पहुंचते हैं, तो हम देखेंगे कि उत्पीड़न और शहादत या मृत्यु के बिंदु पर गवाही और गवाही एक सामान्य विषय है। यानी, जॉन को उम्मीद है कि एंटीपास के साथ जो हुआ, और विशेष रूप से यीशु मसीह के साथ जो हुआ, वह आने वाले समय का एक अग्रदूत है।

और जॉन को उम्मीद है कि रोम और दुष्ट विश्व व्यवस्था और भगवान के लोगों और उनके वफादार गवाहों के बीच टकराव के परिणामस्वरूप और अधिक लोग होंगे जो उनकी गवाही और उनकी गवाही के लिए अपने जीवन का त्याग करेंगे। तो यह चर्च के प्रति जॉन की प्रशंसा है। इस माहौल में जहां शैतान शासन करता है और उसका सिंहासन है और प्रभुत्व रखता है, उन्होंने अपनी वफादार गवाही बनाए रखी है, और एक व्यक्ति, एंटीपास, उस गवाही के लिए मर भी गया है।

हालाँकि, जॉन की प्रशंसा निंदा से कम या नकारात्मक मूल्यांकन से कम है क्योंकि यीशु पेरगाम के चर्च में स्थिति का निदान करते हैं। और मूलतः यूहन्ना हमें जो बताता है वह पद 14 से शुरू होकर पिरगमुन की कलीसिया है, पद 14 में पिरगमुन की कलीसिया में ऐसे लोग हैं जो बिलाम की शिक्षा को मानते हैं, जिसने बालाक को इस्राएलियों को दिया हुआ भोजन खाकर पाप करने के लिए प्रलोभित करना सिखाया था। मूर्तियों और व्यभिचार करके। इसी प्रकार, तुम्हारे पास वे लोग हैं जो नीकुलइयों की शिक्षा को मानते हैं, इसलिये मन फिराओ।

तो, चर्च के साथ समस्या यह है कि वे अनुमति दे रहे हैं या उनके पास कुछ लोग हैं, हालाँकि बड़े पैमाने पर चर्च अपने वफादार गवाह को बनाए रख रहा है, वे कुछ लोगों को अनुमति दे रहे हैं जो बिलाम की शिक्षा और निकोलाईटन की शिक्षा को मानते हैं। अब मुश्किल यह है कि ये लोग कौन हैं या कैसे हैं? ये कौन लोग हैं जो बालाम की शिक्षा को मानते हैं? वे निकोलाईटन कौन हैं जिन्हें जॉन चर्च को पैर जमाने के लिए आलोचना करता है? सबसे पहले, बिलाम। यह पुराने नियम की ओर इशारा करते हुए लेखक का एक और उदाहरण है और लेखक प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में कुछ स्थानों पर क्या करने जा रहा है, हम पहले ही जॉन को परीक्षण के दस दिनों के उदाहरण का उपयोग करते हुए देख चुके हैं। स्मिर्ना को पिछला संदेश, जहां जॉन डैनियल और उसके तीन दोस्तों के उदाहरण का उपयोग उस स्थिति के लिए एक मॉडल या कनेक्शन के रूप में करता है जिसका उसके पाठक सामना कर रहे हैं।

साथ ही, हम देखते हैं कि जॉन पुराने नियम को नकारात्मक अर्थ में प्रयोग करता है, अर्थात् यह प्रदर्शित करने के लिए कि जिस प्रकार पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को झूठी शिक्षा और मूर्तिपूजा आदि द्वारा प्रलोभित किया गया था, उसी प्रकार उसके पाठक भी हैं। अब उसी युग के प्रति संवेदनशील। और इसलिए, वह अब कुछ ऐसे व्यक्तियों या समूहों या संस्थाओं को संदर्भित करने के लिए पुराने नियम के व्यक्तियों और उपाधियों का उपयोग करेगा जो समान प्रकार की झूठी शिक्षा को बढ़ावा दे रहे हैं।

और इसलिए यदि आप संख्या अध्याय 22 और 24 में पुराने नियम की ओर मुड़ें, तो आप बालाम का विवरण पढ़ेंगे। बिलाम एक अन्यजाति भविष्यवक्ता था जिसे मोआब के राजा ने इस्राएल राष्ट्र पर श्राप देने का प्रयास करने के लिए बुलाया था। इसके बजाय, वह आशीर्वाद देता है।

संख्याओं के अध्याय 5 में, इस्राएली फिर मूर्तिपूजा और मोआब की महिलाओं के साथ यौन अनैतिकता में भटक गए, जो एक विदेशी राष्ट्र था। अब दिलचस्प बात यह है कि अध्याय 31 में संख्याओं में आगे बढ़ने के लिए, मूसा इसका श्रेय स्वयं बिलाम को देता है। वह स्पष्टतः इस्राएल को अनैतिकता और मूर्तिपूजा की ओर ले जाने के लिए जिम्मेदार था।

और इसलिए, बालाम एक अर्थ में झूठी शिक्षा के लिए लौकिक बन गया है, जो लोगों को गुमराह करता है, क्योंकि उसने स्पष्ट रूप से इस्राएलियों को अनैतिकता और झूठी शिक्षा और मूर्तिपूजा के साथ समझौता करने के लिए गुमराह किया था। अब भी, जॉन को एक समूह या यहां तक कि एक व्यक्ति के बारे में पता है जिसे वह बिलाम के रूप में लेबल कर सकता है क्योंकि बिलाम उस व्यक्ति के लिए एक मॉडल या शायद लौकिक प्रदान करता है जो झूठी शिक्षा के द्वारा भगवान के लोगों को भटकाता है। तो, यह एक उपयुक्त शीर्षक है, पेरगामन शहर में जो कुछ चल रहा है उसके लिए एक उपयुक्त पदनाम है।

जाहिरा तौर पर, पेर्गमोन में चर्च इस बिलाम को वही काम करने की अनुमति दे रहा है जो बिलाम ने पुराने नियम में किया था, जो अब भगवान के कुछ लोगों को मूर्तिपूजा और यौन अनैतिकता में भटका रहा है। अब एक प्रश्न यह है कि यह बिलाम कौन है? क्या बिलाम पेर्गमोन की कलीसिया में एक विशिष्ट व्यक्ति है? क्या बालाम लोगों के एक निश्चित समूह को संदर्भित करता है? हम निश्चित नहीं हो सकते कि बिलाम केवल एक व्यक्ति है जो एक समूह का मुखिया है या मुख्य रूप से एक समूह को संदर्भित करता है। जॉन विशिष्ट नहीं है।

लेकिन मुख्य बात यह है कि, यह बिलाम जो भी है, वह चर्च को सिखा रहा है कि वाणिज्य और अर्थव्यवस्था और पूजा की रोमन प्रणाली के साथ समझौता करना ठीक है। याद रखें, ये सभी चीजें आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं। यानी, यह व्यक्ति चर्च को सिखा रहा था कि ईसाइयों के लिए रोमन साम्राज्य के साथ समझौता करना और सम्राट की पूजा में शामिल होना, बुतपरस्त देवताओं की मूर्तिपूजा में शामिल होना ठीक है, खासकर शायद उनकी कुछ व्यावसायिक गतिविधियों और दावतों के संबंध में और त्यौहार और उस जैसी चीजें।

अर्थात्, जिस प्रकार बिलाम ने इस्राएलियों को प्रलोभित किया था, उसी प्रकार उन्हें मूर्तिपूजा और व्यभिचार या अनैतिकता की ओर प्रलोभित किया गया। यह विचार पुराने नियम और नए नियम के परमेश्वर के लोगों के बीच कुछ निरंतरता का सुझाव देता है। मेरा मानना है कि, जॉन केवल एक उदाहरण देने से कहीं अधिक कुछ कर रहा है, यह कहकर कि यह दर्शाता है कि अभी क्या हो रहा है।

लेकिन इसके बजाय, एक निरंतरता है। यह उसी प्रकार है जैसे परमेश्वर के लोगों के साथ हुआ था। अब, परमेश्वर के नए लोग, यहूदियों और अन्यजातियों से युक्त चर्च, उसी चीज़ से प्रलोभित है और अब उसी समान स्थिति का सामना कर रहा है।

इसलिए, बेवफाई और मूर्तिपूजा के मामले में परमेश्वर के पुराने और नए लोगों के बीच एक निरंतरता है। बालाम के अलावा जो दूसरा समूह सूचीबद्ध है, बिलाम एक पुराने नियम का व्यक्ति है, दूसरे समूह को निकोलाईटन कहा जाता है। प्रश्नों में से एक यह है कि क्या यह बिल्कुल वही समूह या व्यक्ति है जिसका प्रतिनिधित्व बिलाम करता है या यह पहले समूह से भिन्न समूह है? जो भी मामला हो, मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि चाहे यह एक समान या अलग समूह हो, निकोलाईटन्स नामक यह समूह एक ही चीज़ सिखा रहा है।

वे चर्च को अपने बुतपरस्त परिवेश के साथ समझौता करने की कोशिश कर रहे हैं। वे वास्तव में मूर्तियों को चढ़ाए गए मांस को खाकर और व्यभिचार करके, चर्च को रोमन साम्राज्य की बुतपरस्त संस्कृति के साथ समझौता करने की कोशिश कर रहे हैं। अब, मांस खाने और व्यभिचार करने से संबंधित दो मुद्दे हैं।

सबसे पहले, विशेष रूप से 1 कुरिन्थियों अध्याय 8 से 10 में, हम पॉल को मूर्तियों को चढ़ाए गए मांस खाने की एक समान स्थिति को संबोधित करते हुए पाते हैं। वहाँ, पॉल मूर्तियों को चढ़ाया गया मांस खाने की सीधे तौर पर निंदा नहीं करता है। वह इस तरह से ऐसा करने की निंदा करता है कि कोई अन्य भाई या बहन वास्तव में मांस खाकर उस रिश्ते में प्रवेश करके अपने विवेक का उल्लंघन कर सकता है।

जब वे सोचते हैं कि यह उनके मन में गलत है, तो पॉल वास्तव में उन स्थितियों में भाग लेने की रेखा खींचते प्रतीत होते हैं जहां वे विदेशी मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा करेंगे। लेकिन, जॉन, स्पष्ट रूप से, मूर्तियों को चढ़ाए गए मांस खाने के खिलाफ अपने पूर्ण प्रतिबंध में क्या कर रहा है? सबसे अधिक संभावना है, जॉन एक ऐसी स्थिति की कल्पना कर रहा है जहां मूर्तियों को चढ़ाया जाने वाला मांस केवल किसी के निजी घर में नहीं खाया जाता है। लेकिन, संभवतः, मूर्तियों को चढ़ाया गया मांस खाना, इस संदर्भ में, कुछ निश्चित अवसरों पर हुआ होगा, जहां उन्होंने सम्राट के सम्मान में या बुतपरस्त देवताओं के सम्मान में दावतों और त्योहारों में भाग लिया होगा, जिनके लिए इस मांस की बलि दी गई थी।

तो, दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि जॉन एक ऐसी स्थिति की निंदा कर रहे हैं जो प्रत्यक्ष मूर्तिपूजा, मूर्तिपूजक देवताओं की प्रत्यक्ष पूजा पर आधारित है। और ऐसे संदर्भ में मांस खाने से जॉन मना कर रहा है। और, फिर से, यह व्यापार संघों का हिस्सा हो सकता था, जहां, अपने वाणिज्य के हिस्से के रूप में और अपनी नौकरी के हिस्से के रूप में, उन्होंने इन संघों में भाग लिया होगा और देवताओं के सम्मान में कुछ दावतों और त्योहारों में भाग लिया होगा।

और इसलिए, जॉन शायद जिसकी निंदा कर रहा है, वह कुछ संदर्भों में मांस खाकर पूजा का प्रकट कार्य है। उस व्यभिचार के बारे में क्या जिसके विरुद्ध वह उन्हें चेतावनी देता है? फिर, क्या यह भौतिक है या आध्यात्मिक? यह संभव है, विशेषकर कुछ बुतपरस्त पूजा के संबंध में। यह

सर्वविदित है कि, ग्रीको-रोमन दुनिया के कुछ संदर्भों में, मंदिर की पूजा में भाग लेने से मंदिर की वेश्याओं के साथ शामिल होने का अवसर भी मिलता है।

हो सकता है कि जॉन के मन में यही हो। लेकिन मुझे लगता है, शायद अधिक स्पष्ट रूप से, और शायद जॉन का मुख्य बिंदु व्यभिचार या अनैतिकता का उपयोग उसी तरह करना है जैसे पुराने नियम में अक्सर किया जाता था। और वह यह कि इसके पीछे धारणा यह है कि ईश्वर अपनी प्रजा का पति था।

उनकी प्रजा पत्नी थी। और अन्य मूर्तियों के पीछे जाना, अन्य देवताओं के पीछे जाना, परमेश्वर के साथ वाचा को त्यागना, आध्यात्मिक व्यभिचार करना था। और इसलिए, मुझे आश्चर्य है कि क्या जॉन इसका उपयोग शारीरिक यौन अनैतिकता और व्यभिचार करने के संदर्भ में नहीं कर रहा है, हालांकि यह निहित हो सकता है, लेकिन मुख्य रूप से वह इसका उपयोग पुराने नियम की पृष्ठभूमि के संदर्भ में कर रहा है, जिसका अर्थ है, मूर्तिपूजा के बाद जाना। सम्राट या अन्य बुतपरस्त देवताओं की पूजा करते हुए, वे यीशु मसीह के प्रति विश्वासघाती होकर आध्यात्मिक रूप से व्यभिचार कर रहे हैं।

वास्तव में, बाद में पुस्तक में, हम देखेंगे, विशेष रूप से अध्याय 19 और अध्याय 21 में, हम यीशु मसीह की दुल्हन के रूप में, मेमे की दुल्हन के रूप में परमेश्वर के लोगों के विषय को देखेंगे। और यहाँ, शायद, इसके पीछे यही रूपक छिपा है, कि वे आध्यात्मिक व्यभिचार कर रहे हैं। तो, इस पर जॉन की प्रतिक्रिया यह है कि वे पश्चाताप करते हैं, कि वे रुकते हैं, कि चर्च चर्च में इस शिक्षण की अनुमति देना बंद कर देता है, जो कि भगवान के लोगों को बुतपरस्त, मूर्तिपूजक, अनैतिक समाज के साथ समझौता करने के लिए प्रेरित कर रहा है जिसमें वे रहते हैं, जहां शैतान का सिंहासन है और वह कहाँ शासन करता है।

इसके बजाय, वे अपनी वफ़ादार गवाही बनाए रखते हैं। अन्यथा, पहले कुछ छंदों में मसीह का वर्णन करने के लिए जिस छवि का उपयोग किया गया है, उसके मुंह से निकलने वाली तलवार, चलन में आ जाएगी और मसीह आएंगे और उनके साथ युद्ध करेंगे, जो दिलचस्प बात यह है कि यह एक और रूपक है जो हर जगह पाया जाता है अध्याय 4 से 22, एक लड़ाई या युद्ध का रूपक, विशेष रूप से अध्याय 19 में। लेकिन यदि वे पश्चाताप करने से इनकार करते हैं तो मसीह आएंगे और अपने मुंह से निकलने वाली तलवार से उनसे लड़ेंगे।

परंतु यदि वे विजय पाते हैं, तो मसीह युगांत संबंधी या भविष्य के आशीर्वाद का वादा करता है। और फिर, वैसे, हमने पहले ही उल्लेख किया है, कि प्रत्येक चर्च के लिए, काबू पाने या जीतने का विचार थोड़ा अलग दिखेगा। पेरगाम में चर्च पर काबू पाने का मतलब होगा पश्चाताप करना और समझौता करने से इनकार करना, इन शिक्षकों को अपने चर्च में अनुमति देने से इनकार करना जो भगवान के लोगों को पढ़ा रहे हैं, उन्हें यह कहकर गुमराह करना कि बुतपरस्त रोमन के साथ समझौता करना ठीक है पर्यावरण और समाज।

और इसके बजाय, उसे अस्वीकार करना और पश्चाताप करना ही चर्च के लिए विजय पाने का अर्थ होगा। अब, यीशु ने चर्च के लिए जो वादे किए हैं, युगांत संबंधी भविष्य के आशीर्वाद, यदि

उन पर काबू पाया जाता है, दिलचस्प हैं। सबसे पहले, यीशु ने उन्हें छिपे हुए मन्त्रा का वादा किया।

ध्यान दें, श्लोक 17 से शुरू करते हुए, जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं के बारे में क्या कहता है। जो जय पाए, मैं उसे छिपे हुए मन्त्रा में से कुछ दूँगा। अब मुद्दा यह है कि छिपा हुआ मन्त्रा क्या है? दिलचस्प बात यह है कि, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, अधिकांश आशीर्वाद जो मसीह उस व्यक्ति को देने का वादा करता है जो जय पाता है, अध्याय 20, 21 और 22 में प्रकाशितवाक्य के बिल्कुल अंत में पाए जाते हैं।

अध्याय 21 और 22 में जो आशीर्वाद मसीह के राज्य, उसके शासन और नई सृष्टि की स्थापना से जुड़े हैं, वे विजेता के वादों में उठाए गए हैं। लेकिन यह दिलचस्प है कि इनमें से कम से कम एक या दो अध्याय 20 से 22 में प्रकट नहीं होते हैं। और इसलिए सवाल यह है कि यह छिपा हुआ मन्त्रा क्या है जिसे लेखक उस व्यक्ति से वादा करता है जो जीत जाता है? अब, जैसा कि आप अपने पुराने नियम की समझ और स्मरण से याद करते हैं, उम्मीद है, मन्त्रा स्पष्ट रूप से इस्राएलियों की जंगल पीढ़ी से जुड़ा हुआ है।

जैसे ही भगवान उन्हें मिस्र से बाहर लाए और उन्होंने वादा किए गए देश के रास्ते पर जंगल में अपना सफर तय किया, उनके लोगों के लिए भगवान के प्रावधानों में से एक मन्त्रा था जो लोगों को बनाए रखने के लिए भगवान के उपहार के रूप में स्वर्ग से आया था। हम इसके बारे में पूरे पुराने नियम में कई स्थानों पर इस्राएलियों के बारे में पढ़ते हैं जब वे जंगल में भटकते थे या जंगल से होकर वादा किए गए देश की ओर बढ़ते थे। तो शायद छिपे हुए मन्त्रा की यह धारणा, और हमें इस बारे में बात करनी होगी कि यह अवधारणा कहां से आ सकती है, लेकिन शायद लेखक ने छिपे हुए मन्त्रा का उल्लेख करने का कारण बिलाम कहानी के कारण हो सकता है, जो मूसा के समय की कहानी का हिस्सा था।

तो, यह संभव है कि बिलाम की कहानी जिसका अब लेखक ने उल्लेख किया है, व्यापक कथा को उजागर करती है, और इसलिए वह उस मन्त्रा को याद करता है जो भगवान ने अपने लोगों के लिए प्रदान किया था। हालाँकि, छिपे हुए मन्त्रा का यह विचार इस विचार को भी याद दिला सकता है कि मन्त्रा ने भविष्य के युगांतकारी मोक्ष की अपेक्षाओं में एक भूमिका निभाई थी। वास्तव में, कुछ यहूदी लेखकों को विश्वास था कि जब मंदिर नष्ट हो गया था, तो मन्त्रा सन्दूक में छिपा हुआ था और यह मसीहा के आने पर प्रकट होगा।

और इसलिए यहां, जॉन के मन में इस छिपे हुए मन्त्रा का विचार हो सकता है जो मसीहा के आने पर प्रकट होगा, जैसा कि कुछ साहित्य में पाया गया है। और अब जॉन इसे फिर से अंत समय की मुक्ति के प्रतीक के रूप में उपयोग करता है, अंत समय की युगान्तकारी मुक्ति जिसमें भगवान के लोग भाग लेंगे और आनंद लेंगे यदि वे वफादार बने रहेंगे। तो, जॉन ने पुराने नियम से एक आम छवि ली है, शायद जैसा कि अन्य साहित्य में मन्त्रा को संदर्भित करने के लिए इसकी व्याख्या की गई है जो अंत समय में प्रकट होगी, और अब इसे प्रतीकात्मक रूप से उसी चीज़ को कहने के दूसरे तरीके के रूप में उपयोग करता है जो वह करता है अन्य वादे।

भगवान के स्वर्ग में जीवन का वृक्ष और भगवान के मंदिर में भाग लेना, भगवान के मंदिर में एक स्तंभ होना, एक और छवि जिसका आप बाद में उपयोग करेंगे, ये सभी भगवान द्वारा प्रदान किए जाने वाले मोक्ष का वर्णन करने के अलग-अलग रूपक तरीके हैं। अंत तब होगा जब परमेश्वर बुराई को हराने और अपना राज्य स्थापित करने और अपनी नई रचना, प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 से 22 का उद्घाटन करने के लिए आएगा। इसलिए, छिपे हुए मन्त्रा की पृष्ठभूमि संभवतः मन्त्रा के बारे में पुराने नियम की यहूदी समझ में है। 17 में दूसरे घटक के बारे में क्या? वह आगे कहता है, जो कोई आयेगा, उसे मैं छिपा हुआ मन्त्रा तो दूँगा ही, उसे एक सफ़ेद पत्थर भी दूँगा जिस पर नया नाम लिखा होगा।

अब सवाल यह है कि आखिर यह सफ़ेद पत्थर है क्या? क्योंकि फिर से, हमें छिपे हुए मन्त्रा की तरह, विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य में कहीं और सफ़ेद पत्थर का संदर्भ नहीं मिलता है, विशेष रूप से 20 से 22 में जहाँ जॉन उन आशीर्वादों के लिए पाठ का उपयोग करता है जिनका वह चर्चों से वादा करता है। उस पर विजय प्राप्त की। तो, यह सफ़ेद पत्थर क्या है? स्पष्ट रूप से 2,000 वर्षों की दूरी ने इसे बहुत, बहुत कठिन बना दिया है, और मुझे लगता है कि यह निश्चित होना लगभग असंभव है कि जॉन का इरादा क्या था। हालाँकि कई प्रस्ताव आए हैं, और मैं बस उनमें से कुछ को देखना चाहता हूँ, ऐसे कई प्रस्ताव हैं, लेकिन उदाहरण के लिए, यह सर्वविदित है कि एक सफ़ेद पत्थर अदालत प्रणाली में बरी करने के वोट का संकेत दे सकता है, वोट का नहीं। अपराधी।

उदाहरण के लिए, कुछ आयोजनों, विशेष रूप से भोज में जाने के लिए एक सफ़ेद पत्थर का उपयोग पास के रूप में भी किया जा सकता है। तो, आप एक भोज में जाते हैं, आपका सफ़ेद पत्थर आपके आरएसवीपी या जो कुछ भी आपको भोज में आने पर दिखाना होता है, जैसा होगा। तीसरा, राक्षसों से बचने के लिए ताबीज पर एक सफ़ेद पत्थर भी पहना जा सकता है।

और अन्य संभावित प्रस्ताव भी हैं। ये तीन प्रमुख हैं जो अक्सर सफ़ेद पत्थर की चर्चा में सामने आते हैं। लेकिन जहाँ तक पृष्ठभूमि की बात है तो यह बता पाना लगभग असंभव है कि जॉन के मन में क्या था।

हो सकता है कि जॉन के मन में ये सब रहा हो। मुझे नहीं लगता कि ऐसा मामला है। जॉन के पास इनमें से एक या दो रहे होंगे।

अक्सर जॉन इमेजरी का उपयोग करता है। हम देखेंगे। जॉन कल्पना का उपयोग कर सकता है क्योंकि यह एक से अधिक अर्थों को उद्घाटित करता है।

कभी-कभी जॉन की कल्पना एक ऐसी समृद्धि के साथ हमारे सामने आती है जो केवल एक अर्थ तक सीमित होने से इनकार करती है। यह सुझाए बिना कि इसका अर्थ सब कुछ हो सकता है, यह जानना आवश्यक है कि कभी-कभी जॉन की छवियाँ एक से अधिक अर्थों को उद्घाटित करती हैं। तो, यह संभव है कि जॉन के मन में एक या अधिक विचार हों।

हालाँकि, दिन के अंत में, मुझे नहीं लगता कि हम निश्चित रूप से निश्चित हो सकते हैं कि उदाहरण के लिए, दोषमुक्ति के लिए मतदान करते समय जॉन किस बात का जिक्र कर रहा था। शैतान के आरोप लगाने वाले की पृष्ठभूमि में यह समझ में आएगा। और अब परमेश्वर के लोग आज़ाद हो गए हैं और वे बरी हो गए हैं और दोषमुक्त हो गए हैं, जो प्रकाशितवाक्य में एक और महत्वपूर्ण विषय है।

भोज में शामिल होने का रास्ता निश्चित रूप से समझ में आएगा। अध्याय 19 में, परमेश्वर के लोग मेमे के भोज में प्रवेश करते हैं। क्या इसका तात्पर्य राक्षसों को दूर करने से है? राक्षसी प्राणियों के प्रभाव और शैतान की भूमिका को देखते हुए यह भी संभव है।

इस पाठ में भी, यह संभव है कि वह चलन में आ सके। हम बिल्कुल निश्चित नहीं हो सकते। हम निश्चित हो सकते हैं कि सफेद पत्थर उनके स्वर्गीय युगांतिक पुरस्कार और उनके स्वर्गीय उद्धार का प्रतीक है।

तो, मन्ना और सफेद पत्थर केवल दो छवियां हैं जो अलग-अलग दृष्टिकोण से एक ही चीज़ का वर्णन करते हैं, उनके युगांतिक मोक्ष का। नया नाम, फिर, यह बताना मुश्किल है कि लेखक के मन में यह नया नाम क्या है। लेकिन एक नए नाम का विचार वास्तव में, फिर से, पुराने नियम की प्राथमिकता है।

यदि आप यशायाह की पुस्तक पर वापस जाएं, जो एक ऐसी पुस्तक है जो जॉन के लेखन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जॉन फिकस नामक लेखक की एक किताब है। मूल रूप से, यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यशायाह का उपयोग है और इसका रहस्योद्घाटन की पुस्तक के भविष्यसूचक पूर्ववृत्त से संबंध है।

वह विस्तार से सर्वेक्षण करता है कि जॉन कई ग्रंथों में यशायाह का उपयोग कैसे करता है। तो नया नाम वास्तव में वह है जो यशायाह में कुछ स्थानों पर पाया जाता है। उदाहरण के लिए, अध्याय 62 में.

और इनमें से अधिकांश ग्रंथ भविष्य की प्रत्याशाएं हैं, भगवान अपने लोगों को बहाल करेंगे। अध्याय 62 और श्लोक 2 में, लेखक कहता है, राष्ट्रों के लोग तेरा धर्म और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे। तुम्हें एक नये नाम से बुलाया जाएगा जो प्रभु का मुख प्रदान करेगा।

आपको अध्याय 65 में भी एक समान विचार मिलता है। यशायाह अध्याय 65 और श्लोक 15। फिर, यह नई रचना के संदर्भ में है।

यशायाह अध्याय 65 में कुछ छंद बाद में, एक पाठ जो प्रकाशितवाक्य के अध्याय 21 में उठाया जाता है। मैंने एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी देखी। यशायाह के अध्याय 65 और श्लोक 15 में, तुम अपना नाम मेरे चुने हुए लोगों के लिए अभिशाप के रूप में छोड़ जाओगे।

प्रभु यहोवा तुम्हें तो मार डालेगा, परन्तु अपने सेवकों को दूसरा नाम देगा। इसलिए नए नाम की इस अवधारणा के कारण, यह बताना कठिन है कि जॉन के मन में वास्तव में कौन सा नाम है। लेकिन हो सकता है कि वह केवल पुराने नियम के पाठों का उल्लेख या संकेत कर रहा हो।

फिर से, अब यह कहना है कि यशायाह की एक नई रचना की प्रत्याशा जो प्रकाशितवाक्य 21 में उठाई गई है, वह वादा है जो पेरगाम में चर्च के लिए निहित है। यदि वे पश्चात्ताप करेंगे और यदि वे पराजित होंगे और बुतपरस्त दुनिया के साथ समझौता करने से इंकार कर देंगे। इसलिए, पेरगाम के चर्च के लिए, रहस्योद्घाटन का शेष भाग उनके लिए दृढ़ रहने के आह्वान के रूप में कार्य करेगा।

हालाँकि, यह न केवल दृढ़ रहने के लिए, बल्कि उन लोगों के लिए भी एक आह्वान के रूप में कार्य करेगा जो समझौता कर रहे हैं या जो चर्च में ऐसे लोगों को अनुमति दे रहे हैं जो समझौता कर रहे हैं। प्रकाशितवाक्य की शेष पुस्तक उपदेश के शब्द के रूप में कार्य करेगी। वे प्रकाशितवाक्य में युद्ध के दृश्यों को कुछ इस तरह पढ़ेंगे कि उनके गलत अंत में होने का खतरा है।

यदि वे पश्चात्ताप करने से इनकार करते हैं, यीशु ने उनसे तलवार लेकर आने का वादा किया। जब वे अध्याय 4-22 और युद्ध के चित्रण, मसीह के चित्रण, उदाहरण के लिए, अध्याय 19 में युद्ध करने के लिए एक सफेद घोड़े पर आ रहे हैं, तो वे स्पष्ट हो जाएंगे और अधिक वास्तविकता बन जाएंगे।

तो एक बार फिर, यह इस पर निर्भर करता है कि क्या चर्च के लोग अपनी वफादार गवाही बनाए रख रहे हैं या क्या वे समझौता करने के लिए प्रलोभित हैं। वे प्रकाशितवाक्य की बाकी किताब को अलग तरीके से पढ़ेंगे। चाहे वे पश्चात्ताप करें या पश्चात्ताप करने से इनकार करें।

अध्याय 2 में अगला चर्च और प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 में उल्लिखित अंतिम चर्च थुआतीरा का चर्च है। अध्याय 2 श्लोक 18-29 में थुआतीरा यह वृत्ताकार मार्ग पर अगला शहर होगा। फिर, संभवतः जॉन के पास स्वयं इन चर्चों के बीच एक मंत्रालय था।

लेकिन यह प्राकृतिक मार्ग पर अगला शहर होगा जिसमें ये सात चर्च शामिल होंगे। थुआतीरा एक व्यापारिक नगर के रूप में जाना जाता था। लेकिन साथ ही, शायद यह सात शहरों में से सबसे कम महत्वपूर्ण था।

जहां तक राजनीतिक और वाणिज्यिक की बात है, लेकिन दूसरी और तीसरी शताब्दी तक इसे अधिक दर्जा और अधिक समृद्धि प्राप्त हो जाएगी। थोड़ी देर बाद.

यह अपने व्यापारिक संघों के लिए जाना जाता था। हमने इसके बारे में थोड़ी बात की है। व्यापार संघों में भाग लेने का मतलब आपके वाणिज्य से जुड़े व्यापार संघों के सामाजिक और धार्मिक जीवन में भाग लेना भी होगा।

और थुआतीरा का सामाजिक और धार्मिक जीवन। अधिकांश संघों का एक संरक्षक देवता रहा होगा। एक ऐसा देवता जिसे उनकी समृद्धि और उनकी सफलता के लिए जिम्मेदार माना जाता था।

और इन संघों में भाग लेने से इंकार करना। और देवताओं के प्रति आप पर जो कृतज्ञता का ऋण बकाया है, उसे स्वीकार करने से इंकार करना। रोमन साम्राज्य की तो बात ही छोड़ दीजिए।

इसे अनुरूपता से इनकार करने के चरम संकेत के रूप में देखा गया होगा। और देवताओं के प्रति कृतघ्नता का चरम संकेत। और उन लोगों के लिए जो आपकी सफलता के लिए जिम्मेदार थे।

इसके अलावा, थुआतीरा सम्राट की पूजा के अर्थ में एक प्रकार का केंद्र था। तो एक बार फिर थुआतीरा शहर या शहर ने एक ऐसा संदर्भ प्रदान किया होगा जहां ईसाइयों को समझौता करने और न केवल बुतपरस्त पूजा बल्कि सम्राट की पूजा को भी शामिल करने का प्रलोभन दिया गया था। तो, यहाँ यीशु थुआतीरा के इस चर्च से क्या कहते हैं।

थुआतीरा की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि ये परमेश्वर के पुत्र के वचन हैं, जिनकी आंखें धधकती आग के समान हैं, और जिनके पांव चमकाए हुए पीतल के समान हैं। मैं आपके कर्मों, आपके प्रेम और आपके विश्वास, आपकी सेवा और दृढ़ता को जानता हूँ, और यह कि आप अब पहले से भी अधिक कर रहे हैं। फिर भी, मेरे पास यह आपके विरुद्ध है।

आप उस स्त्री इज़ेबेल को सहन करते हैं जो स्वयं को भविष्यवक्ता कहती है। वह अपने उपदेश से मेरे सेवकों को व्यभिचार और मूर्तों को बलि किया हुआ भोजन खाने के लिये बहकाती है। मैंने उसे अपनी अनैतिकता पर पश्चाताप करने का समय दिया है लेकिन वह तैयार नहीं है।

इसलिए, मैं उसे पीड़ा के बिस्तर पर डाल दूंगा और जो लोग उसके साथ व्यभिचार करते हैं उन्हें मैं तब तक गंभीर पीड़ा पहुंचाऊंगा जब तक कि वे उसके तरीकों से पश्चाताप नहीं करते। मैं उसके बच्चों को मार डालूंगा, तब सारी कलीसियाएं जान लेंगी कि मैं ही हृदयों और मनो को जांचता हूँ, और तुम में से हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूंगा। अब मैं थुआतीरा के बाकियों से कहता हूँ, जो उसकी शिक्षा पर कायम नहीं हैं और शैतान के तथाकथित गहरे रहस्यों को नहीं जानते हैं, मैं तुम पर कोई अन्य बोझ नहीं डालूंगा, केवल मेरे आने तक जो तुम्हारे पास है उसे पकड़े रहो।

जो जय पाए और अन्त तक मेरी इच्छा पूरी करे, उसे मैं अन्यजातियों पर अधिकार दूंगा। वह लोहे के राजदण्ड से उन पर शासन करेगा। वह उन्हें मिट्टी के बर्तनों की नाई टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

पिता से अधिकार मिला, उसी प्रकार मैं भी उन्हें भोर का तारा दूंगा। और जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। अब जैसा कि हम इस खंड को पढ़ते हैं, आपको एहसास होगा कि पिछले चर्च पेरगाम की तरह, थुआतीरा को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों मूल्यांकन प्राप्त होते हैं, हालांकि नकारात्मक मूल्यांकन सकारात्मक मूल्यांकन के लिए समर्पित स्थान से कहीं अधिक है।

लेकिन यह एक ऐसा चर्च है जिसे प्रशंसा और निंदा दोनों मिलती है। लेकिन ध्यान दें कि ईसा मसीह ने अध्याय 1 से अपने लिए बताई गई विशेषता का वर्णन कैसे किया है, उनका वर्णन ऐसे व्यक्ति के रूप में किया गया है जिसकी आंखें धधकती हुई आग की तरह हैं और पैर जले हुए कांस्य की तरह हैं, अध्याय 1 से श्लोक 9 की शुरुआत और उसके बाद मनुष्य के पुत्र का वर्णन मिलता है। इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि थुआतीरा में चर्च के प्रति मसीह की प्राथमिक मुद्रा फिर से एक न्यायाधीश की है।

जैसे कि जिसके पास आग जैसी चमकती आंखें हैं, वह ध्यान दें कि वह खुद का वर्णन कैसे करता है, पद 23 में यीशु खुद का वर्णन कैसे करता है, मैं उसके बच्चों को मार डालूंगा, तब सभी चर्चों को पता चल जाएगा कि मैं वह हूँ जो दिल और दिमाग की जांच करता है। अर्थात् अपनी धधकती आग की आँखों से मसीह अपने चर्च और अपने लोगों के मन और हृदयों को देखने और उनकी वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन करने में सक्षम है। इसलिए भले ही वह उनकी सराहना करेगा, मसीह की मुद्रा मुख्य रूप से वह होगी जो आग से धधकती आँखों के साथ आएगी, जो उनके अस्तित्व में छेद करने और उनके मन और दिल को देखने में सक्षम है और जो पश्चाताप करने से इनकार करने पर फिर से उनके पास आएगा।

और यहाँ यह दिलचस्प है कि इन सभी पत्रों में मसीह अपने चर्च को अपने किए पर पश्चाताप करने का समय देते हैं। इसलिए, वह सिर्फ आकर यह नहीं कहता है कि मैं तुम्हें नष्ट करने के लिए आ रहा हूँ बल्कि वह उन्हें बुलाता है और उनके साथ बना रहता है ताकि वे अपने तरीकों पर पश्चाताप कर सकें ताकि वे अपने युगांतकारी आशीर्वाद में प्रवेश कर सकें ताकि वे जीत सकें और परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए जो वादे किए हैं उन्हें विरासत में पाओगे। अब प्रशंसा यह है कि वह उनके अच्छे कार्यों के लिए उनकी सराहना करता है और यह दिलचस्प है कि वह कहता है कि आपके बाद के कार्य आपके पहले से भी अधिक महान हैं।

तो जाहिर तौर पर उनके काम और उनकी आज्ञाकारिता और उनकी वफादार गवाही बढ़ गई है और अब पहले से भी अधिक बढ़ गई है। फिर भी प्रशंसा अल्पकालिक है क्योंकि पद 20 में तुरंत यीशु निंदा की ओर मुड़ते हैं और इस अध्याय में निंदा पेरगाम में निंदा के समान ही प्रतीत होती है। इसका मतलब है कि थुआतीरा में चर्च को अपने बुतपरस्त परिवेश के साथ समझौता करने का खतरा है, वे चर्च में शिक्षण की अनुमति देकर अपने वफादार गवाह के साथ समझौता कर रहे हैं जो मूल रूप से चर्च को भटका रहा है और कह रहा है कि अपने बुतपरस्त माहौल के साथ समझौता करना ठीक है, देवताओं की पूजा करना ठीक है और सीज़र की पूजा करना और मूर्तियों को चढ़ाया गया मांस खाना और मूर्तिपूजा के परिणामस्वरूप यौन अनैतिकता या आध्यात्मिक व्यभिचार में संलग्न होना और फिर भी यीशु मसीह की पूजा करना।

और अब मसीह चर्च की निंदा करते हैं या उन्हें नकारात्मक मूल्यांकन देते हैं क्योंकि उन्होंने चर्च में इस शिक्षा को सहन किया है। वह छवि जो जॉन इस खंड में उपयोग करता है, और कभी-कभी मैं जॉन और जीसस को लगभग एक दूसरे के स्थान पर उपयोग करता हूँ क्योंकि जॉन इसे स्पष्ट रूप से लिख रहा है, लेकिन वह यीशु के शब्दों को रिकॉर्ड कर रहा है इसलिए मैं नहीं चाहता कि आप इसे भ्रमित करें। कभी-कभी मैं इसे यीशु के बोलने के रूप में संदर्भित करूँगा, अन्य समय

में मैं जॉन का उल्लेख करूंगा क्योंकि वह ही है जो चर्चों को संबोधित करने के लिए इसे लिख रहा है। वह वही है जिसे अध्याय 1 में चर्चों को संबोधित करने के लिए नियुक्त किया गया है।

लेकिन अब जॉन फिर से पुराने नियम की एक छवि का उपयोग करता है। इस बार यह इज़ेबेल नाम की महिला की छवि है। और फिर, जॉन को यह पुराने नियम से 1 किंग्स अध्याय 16 और अध्याय 21 में भी मिलता है।

हम इस इज़ेबेल के बारे में पढ़ते हैं जो राजा अहाब की पत्नी है, और यह इज़ेबेल ही थी जिसने इसराइल को विदेशी देवता बाल की पूजा करने के लिए प्रेरित किया था। और जॉन अब उस कहानी का उपयोग एक बार फिर से करता है, ठीक वैसे ही जैसे उसने बिलाम के साथ किया था। जॉन अब उस कहानी का उपयोग चर्च को इसी तरह के खतरे को समझने में मदद करने के लिए करता है।

फिर से, वह मान रहा है कि भगवान के पुराने लोगों और अब भगवान के नए लोगों के बीच उसी तरह निरंतरता है जैसे पुराने नियम में उन्हें गुमराह किया गया था और प्रलोभन दिया गया था, मूर्तिपूजा में भटकाया गया था। अब, एक बार फिर, भगवान के लोगों को एक ऐसी शिक्षा का सामना करना पड़ रहा है जो उन्हें अपने बुतपरस्त परिवेश और संस्कृतियों को समायोजित करने और बुतपरस्त देवताओं की पूजा करने और साथ ही सम्राट की पूजा करने के लिए प्रेरित करके मूर्तियों की पूजा करने के लिए भटका देगी। और इसलिए, थुआतीरा के चर्च में जो कुछ चल रहा है, उसके लिए इज़ेबेल एक उपयुक्त प्रकार का कोड बन गया है।

एक बार फिर, यह निश्चित करना मुश्किल है कि इज़ेबेल किसी विशिष्ट व्यक्ति को संदर्भित करता है या किसी समूह को संदर्भित करता है। जिस तरह से लेखक ने यहां उसका वर्णन किया है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उसके मन में एक विशिष्ट महिला भविष्यवक्ता या भविष्यवक्ता है जो चर्च में घुसपैठ कर रही है और चर्च को पढ़ा रही है या उन्हें भटका रही है और उन्हें धोखा देकर उन्हें समायोजित करने की कोशिश कर रही है। थुआतीरा में मूर्तिपूजा प्रथाओं में भाग लेने से। यह दिलचस्प है कि इज़ेबेल क्या करती है और उसका वर्णन यहाँ श्लोक 20 में कैसे किया गया है, अपनी शिक्षा के द्वारा वह मेरे सेवकों को यौन अनैतिकता के लिए गुमराह या धोखा देती है।

दिलचस्प बात यह है कि धोखा देने की यह अवधारणा सटीक भाषा है जो प्रकाशितवाक्य के अध्याय 12 और 13 में फिर से सामने आती है। अध्याय 12 में शैतान और दो जानवर हैं जो पूरी दुनिया को धोखा देने और उन्हें भटकाने के दोषी हैं। और वास्तव में, अध्याय 13 में, दूसरा जानवर उन्हें पहले जानवर की पूजा करवाने की कोशिश करता है।

और वास्तव में, यह उत्पत्ति अध्याय 3 के बाद से शैतान की चाल रही है जहां शैतान ने आदम को धोखा दिया था और इसलिए इज़ेबेल या इस महिला भविष्यवक्ता को धोखा देने की यह धारणा, अगर थुआतीरा में हम इसे इसी तरह से समझते हैं, भगवान के लोगों को धोखा दे रहा है, तो यह मिलेगा बाद में प्रकाशितवाक्य अध्याय 13 और 12 और 13 में वर्णित किया गया है जहां शैतान और दो जानवर पूरी दुनिया को धोखा देने और भगवान के लोगों को धोखा देने के दोषी हैं। अब,

अधिक सीधी भाषा में, जॉन इस महिला भविष्यवक्ता, इज़ेबेल का वर्णन चर्च को मूर्तिपूजा की ओर भटकाने वाली के रूप में करता है। और फिर, हमने कहा कि प्रकाशितवाक्य के अध्याय 4 से 22 तक जॉन पहले से ही अध्याय 2 से अध्याय 3 में जो वर्णन कर रहा है, उसका अधिक सर्वनाशकारी दृष्टिकोण या सर्वनाशकारी विवरण है। अब, थुआतिरा के संदेश के छंद 22 और 23 में, लेखक कहता है, मैं मैंने उसे अपनी अनैतिकता से पश्चाताप करने का समय दिया है, लेकिन वह तैयार नहीं है, इसलिए मैं उसे पीड़ा के बिस्तर पर डाल दूंगा, और जो लोग उसके साथ व्यभिचार करते हैं, उन्हें मैं तब तक गंभीर पीड़ा दूंगा जब तक वे पश्चाताप नहीं करते।

तो फिर, मुझे लगता है कि यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी है जो ईज़ेबेल के साथ भाग लेते हैं। और फिर, प्रतीकात्मक कल्पना पर ध्यान दें। वह सचमुच उसे बिस्तर पर फेंकने की बात नहीं कर रहा है।

और फिर, व्यभिचार और व्यभिचार, अनैतिक भाषा के उपयोग पर ध्यान दें, शायद फिर से मुख्य रूप से रूपक रूप से यीशु मसीह के प्रति बेवफाई और मूर्ति पूजा और मूर्तिपूजा में भाग लेने का उल्लेख किया गया है। अब, मुझे लगता है कि इन छंदों में जो वर्णित है, वह एक बार फिर विभिन्न विपत्तियों और विभिन्न निर्णयों की आशंका जताता है, जिन्हें अध्याय 4 से 22 तक अधिक विस्तार से बताया जाएगा। और इसलिए पहले से ही, जॉन चर्च को चेतावनी दे रहा है कि इज़ेबेल और उसकी शिक्षा में भाग लेने से, और उसकी शिक्षा में भाग लेने से जो उन्हें मूर्तिपूजा में संलग्न होने के लिए भटकाती है, क्या वे उन विपत्तियों और क्लेशों के प्राप्तकर्ता होंगे जो अध्याय में पाए जाते हैं 4 से 22 तक यदि वे पश्चाताप करने से इनकार करते हैं।

साथ ही, ध्यान दें जब आप इसे पढ़ते हैं तो यह सवाल भी उठता है कि यहां कितने समूह शामिल हैं? क्योंकि आपके पास इज़ेबेल का संदर्भ है, आपके पास उसके बच्चों का संदर्भ है, आपके पास उन लोगों का संदर्भ है जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं। संभवतः, इसे देखने का एक तरीका यह है कि लेखक के मन में यहाँ केवल दो समूह हो सकते हैं। ईज़ेबेल और उसके बच्चे केवल उन लोगों को संदर्भित करेंगे जो इस झूठी शिक्षा को बढ़ावा दे रहे हैं, यानी वे जो परमेश्वर के लोगों को व्यभिचार करने और मूर्तिपूजा करने के लिए धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं।

और फिर जो लोग उसके साथ व्यभिचार करते हैं वे चर्च के वे सदस्य होंगे जिन्हें उसका अनुसरण करने का खतरा है। लेकिन किसी भी मामले में, तस्वीर फिर से स्पष्ट है। चर्च के बारे में यीशु को क्या चिंता है, पेर्गमम और अध्याय 2 और 3 में कुछ अन्य चर्चों की तरह, जिन्हें मसीह संबोधित करते हैं, वे एक ऐसी शिक्षा की अनुमति देने के दोषी हैं जो लोगों को उनके वफादार गवाहों को समायोजित करने या समझौता करने के लिए गुमराह कर देगी। बुतपरस्त देवताओं की पूजा और साथ ही सम्राट की पूजा के माध्यम से मूर्तिपूजा में भाग लेकर यीशु मसीह के प्रति।

तो फिर, यीशु उन्हें पश्चाताप करने के लिए कहते हैं और साथ ही, पद 26 की शुरुआत में, उन लोगों के लिए वादा करते हैं या प्रदान करते हैं जो विजयी होते हैं। यह उन लोगों के लिए है जो पश्चाताप करते हैं और इस शिक्षा को स्वीकार करने से इनकार करते हैं और देने से इनकार करते हैं कि वे मूर्तिपूजा गतिविधि के साथ यीशु मसीह में अपने विश्वास से समझौता कर सकते हैं। जो लोग विजयी हुए, उनके लिए यीशु ने वादा किया कि वे विजयी होंगे और राष्ट्रों पर शासन करेंगे।

इसलिए, अपनी बुतपरस्त दुनिया और पर्यावरण से धोखा खाने के बजाय, वास्तव में, वे उस पर शासन करेंगे। उन्हें राष्ट्रों को जीतते और उन पर शासन करते देखा जाता है। श्लोक 27 में ध्यान दें, लेखक पुराने नियम से उद्धरण देकर, फिर से, भजन अध्याय 2 से उद्धृत करके, इस बात का समर्थन करता है कि वह उन पर लोहे के राजदंड से शासन करेगा, वह उन्हें मिट्टी के बर्तनों की तरह टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

दिलचस्प बात यह है कि यह नए नियम में कहीं और एक पाठ है जो यीशु मसीह पर लागू होता है, और बाद में अध्याय 12 में, हमने पढ़ा, मुझे लगता है कि हमने अध्याय 12 को संक्षेप में एक अनुच्छेद के उदाहरण के रूप में देखा जो वास्तव में एक अतीत की घटना को संदर्भित करता है ईसा मसीह का जन्म है। वह कहानी एक ऐसी महिला की है जो गर्भवती है और एक अजगर उसके बच्चे को निगलने की प्रतीक्षा कर रहा है। वह एक बेटे को जन्म देती है और उसे तुरंत ड्रैगन की पकड़ से छुड़ाकर स्वर्ग में ले जाया जाता है।

उस पुत्र का वर्णन ऐसे व्यक्ति के रूप में किया गया है जो लोहे के राजदंड के साथ शासन करता है, ऐसे व्यक्ति के रूप में जो लोहे की छड़ी के साथ अपने लोगों की देखभाल करेगा, भजन अध्याय 2 से। अब, यह दिलचस्प है कि यह भगवान के लोगों पर लागू होता है। इसलिए, न केवल मसीह ही वह है जो विजय प्राप्त करता है और शासन करता है, बल्कि उसके लोग भी यदि विजयी होते हैं तो उस शासन में भागीदार होते हैं। तो, फिर से, विडंबना कुछ दिलचस्प है।

राष्ट्रों और बुतपरस्त वातावरण से धोखा खाने और गुमराह होने के बजाय, यदि वे जीत जाते हैं, तो वे वास्तव में इस पर शासन करेंगे। वे वास्तव में राष्ट्रों पर मसीह के शासन में हिस्सा लेंगे और वे यीशु द्वारा अपने दुश्मनों की हार में हिस्सा लेंगे जो उन्हें धोखा देने और उन्हें गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं। तो, पेरगाम में चर्च के समान, यह चर्च को पश्चाताप करने का आह्वान है।

अर्थात्, वे शेष रहस्योद्घाटन को पश्चाताप करने के आह्वान के रूप में पढ़ेंगे, एक चेतावनी के रूप में कि यदि वे पश्चाताप करने से इनकार करते हैं तो क्या होगा, और रोम की शक्ति से धोखा न खाने के आह्वान के रूप में। तो, फिर से, शेष अध्याय 4 से 22 के साथ संबंध हैं। इसलिए, वे प्रकाशितवाक्य को मुख्य रूप से एक चेतावनी के रूप में पढ़ेंगे।

एक चेतावनी कि यदि वे पश्चाताप करने से इनकार करते हैं, यदि वे समझौता करते हैं, तो वे शेष अध्याय में आने वाले निर्णयों और विपत्तियों में भाग लेंगे। लेकिन यदि वे फिर से विजयी हो जाते हैं, तो उन्हें युगांत संबंधी मुक्ति, वह आशीर्वाद प्राप्त होगा जो भगवान ने अपने लोगों के लिए रखा है। अगला चर्च जिसे यीशु संबोधित करते हैं, जिसे जॉन संबोधित करते हैं, यीशु के शब्द लिखते हैं, चर्च के लिए यीशु का संदेश, अध्याय 3 और छंद 1 से 6 में सरदीस शहर में एक चर्च है। यह, फिर से, होता। वृत्ताकार मार्ग पर अगला शहर।

यह थुआतिरा शहर का दक्षिण-पूर्व था जिसे हमने अभी अध्याय 2 के अंत में देखा था। दिलचस्प बात यह है कि अतीत में, सरदीस एक महत्वपूर्ण सैन्य गढ़ था। और, वास्तव में, सार्डिस लगभग

सैन्य ताकत और सैन्य शक्ति का पर्याय बन गया। इसके अलावा, यह अपार धन का शहर था जिसे इसने व्यापार और वाणिज्य के माध्यम से अर्जित किया था।

एक दिलचस्प कहानी, शहर के इतिहास में एक बिंदु पर, एंटीओकस III, जॉन द्वारा यहां शहर को संबोधित करने से कई साल पहले, एंटीओकस III नाम के एक राजा ने वास्तव में इसे एक बहुत ही महत्वपूर्ण हार में हराया था जब एक क्रेटन चट्टानों से नीचे उतरा था। यह अपने किले के लिए जाना जाता था। जब एक क्रेटन वास्तव में शहर के एक्रोपोलिस की चट्टान से नीचे उतरा और उसे एक ऐसा स्थान मिला जो असुरक्षित और खाली था और शहर में प्रवेश करने में सक्षम था और शहर को अपनी बहुत कम पराजयों में से एक का सामना करना पड़ा।

अन्यथा, यह शहर एक सैन्य गढ़ के रूप में जाना जाता था और इसकी एक तरह से प्रतिष्ठा थी। लगभग 17 ई. में, फिर से, जॉन द्वारा यहां चर्च को संबोधित करने से कई साल पहले, सरदीस शहर, साथ ही कुछ अन्य शहर जिन्हें हम सरदीस के आसपास देखेंगे, एक विनाशकारी भूकंप का सामना करना पड़ा। लेकिन सम्राट ऑगस्टस द्वारा प्रदान की गई सहायता से इसका पुनर्निर्माण किया गया।

हम एक क्षण में देखेंगे कि दूसरे शहर को वास्तव में भूकंप का सामना करना पड़ा, लेकिन इसका पुनर्निर्माण उसके अपने धन से, उसके अपने नागरिकों के धन से किया गया। लेकिन यहाँ, ऑगस्टस ने 17 ई. में आए भूकंप के बाद शहर के पुनर्निर्माण के लिए सहायता प्रदान की थी। यह कई मूर्तिपूजक देवताओं का घर भी था।

और दिलचस्प बात यह है कि इसमें काफी बड़ी संख्या में यहूदी आबादी भी शामिल थी और साथ ही यह सम्राट की पूजा का केंद्र भी था। अब, मसीह सरदीस में चर्च को संबोधित करते हैं, जो अध्याय 3 और पद 1 से इन शब्दों के साथ शुरू होता है। सरदीस की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि ये उसके वचन हैं, जो परमेश्वर की सात आत्माओं और सात तारोंको रखता है।

मैं तुम्हारे कर्मों को जानता हूँ, तुम्हारी प्रतिष्ठा जीवित होने की है, परंतु तुम मृत हो। जाग, और जो बच गया है और मरने पर है उसे दृढ़ कर, क्योंकि मैं ने तेरे कामोंको अपने परमेश्वर के साम्हने पूरा नहीं पाया। इसलिये जो कुछ तुम ने पाया और सुना है, उसे स्मरण रखो, उसका पालन करो, और मन फिराओ।

परन्तु यदि तुम न जागोगे, तो मैं चोर के समान आऊंगा, और तुम न जानोगे कि मैं किस समय तुम्हारे पास आऊंगा। फिर भी सरदीस में ऐसे कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने वस्त्र गंदे नहीं किये हैं। वे श्वेत वस्त्र पहनकर मेरे साथ चलेंगे, क्योंकि वे योग्य हैं।

जो जय पाएगा वह उनके समान होगा और श्वेत वस्त्र धारण करेगा। मैं जीवन की पुस्तक से उसका नाम कभी नहीं मिटाऊंगा, बल्कि अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने उसका नाम स्वीकार करूंगा। जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।

तो, सरदीस के चर्च के साथ समस्या यह है कि जाहिर तौर पर उनके पास जीवित होने की प्रतिष्ठा है, फिर भी मसीह वह है जो लोगों के बीच में चलता है, और ध्यान दें कि वह वही है जो सात

आत्माओं को रखता है, वह वह है जो सात आत्माओं को रखता है उसके हाथों में सितारे. वह वह है जो अपने लोगों के बीच में है और उनकी स्थिति का मूल्यांकन करने और देखने में सक्षम है। वह उनका मूल्यांकन वास्तव में मृत के रूप में करता है, हालाँकि उनके पास जीवित होने की प्रतिष्ठा है।

दूसरे शब्दों में, अध्याय 3 में सार्डिस का मूल्यांकन मुख्य रूप से नकारात्मक होगा, हालाँकि बाद में लेखक कहेगा कि आपके बीच में कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने कपड़े गंदे नहीं किए हैं। इसका मतलब बस इतना है कि उन्होंने मूर्तिपूजा और बुतपरस्त माहौल से समझौता नहीं किया है। उन्होंने अपनी विश्वसनीय गवाही कायम रखी है।

उन्होंने समझौता करने से इनकार कर दिया है, फिर भी बड़े पैमाने पर अधिकांश चर्च ने समझौता किया है, और इस वजह से उन्हें आध्यात्मिक रूप से जीवित होने की प्रतिष्ठा प्राप्त है, फिर भी साथ ही वे वास्तव में आध्यात्मिक रूप से मृत हैं। और ध्यान दें, यह दिलचस्प है, तथ्य यह है कि वह आत्माओं को रखता है, उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जो भगवान की सात आत्माओं को रखता है, और यह अध्याय 1 से भी वर्णन है। हमने कहा कि भगवान की सात आत्माएं शायद भगवान की आत्मा की पूर्णता का सुझाव देती हैं, सात पूर्णता और पूर्णता की संख्या है, इसलिए हमें शायद सात अलग-अलग आत्माओं के संदर्भ में नहीं, बल्कि भगवान की आत्मा की पूर्णता के बारे में सोचना चाहिए।

फिर, इसका महत्व न केवल यह है कि मसीह अपने लोगों के साथ मौजूद हैं और उनकी स्थिति को देखने और उसका मूल्यांकन करने में सक्षम हैं, बल्कि यह केवल आत्मा की शक्ति से है कि वे दिखने की अपनी स्थिति से उभरने में सक्षम हैं। जीवित है, लेकिन वास्तव में आध्यात्मिक रूप से मृत है। तो, मसीह ऐसे व्यक्ति के रूप में आता है जिसके पास वह सब कुछ है जो उन्हें आध्यात्मिक रूप से फिर से जीवित होने के लिए आवश्यक है, जैसे कि वे जो आध्यात्मिक रूप से मर चुके हैं। वास्तव में, हालाँकि वे जीवित प्रतीत होते हैं, अपने स्वयं के मूल्यांकन और अपने अनुमान में, वे फिर से मर चुके हैं, शायद इसलिए कि उन्होंने अपनी धर्मनिरपेक्ष संस्कृति में गवाही देने से इनकार कर दिया है, उन्होंने अपने वफादार गवाह को बनाए रखने से इनकार कर दिया है, और इसके बजाय वे पेरगाम में चर्च की तरह, थुआतिरा में चर्च की तरह, वे समझौता कर रहे हैं और उसी दबाव का सामना कर रहे हैं जिसका सामना अन्य चर्चों ने किया है, यानी, मूर्तिपूजा और मूर्तिपूजा में शामिल होने का प्रलोभन, बुतपरस्त देवताओं और सम्राट की पूजा करने का प्रलोभन पूजा, सरदीस के जीवन के कुछ पहलुओं में शामिल होने का एक प्रलोभन जिसने उन्हें मूर्तिपूजा गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया होगा, जैसा कि अन्य चर्चों ने भी सामना किया है।

शायद उन दबावों से बचने के लिए, अब वे समझौता करने और अपने परिवेश के साथ तालमेल बिठाने को तैयार हैं ताकि स्मिर्ना और बाद में फिलाडेल्फिया जैसे चर्चों को समझौता करने से इनकार करने और अपने वफादार गवाह को बनाए रखने के कारण सामना करना पड़ रहा है। इस स्थिति का समाधान यह है कि वे जीवित प्रतीत होते हैं, लेकिन किसी तरह वे इस हद तक समायोजित हो गए हैं कि वे अब अपने परिवेश के साथ समायोजन और समझौता करने के

कारण प्रभावी रूप से आध्यात्मिक रूप से मृत हो गए हैं। इसका समाधान, फिर से, अन्य चर्चों की तरह, बस यही है कि उन्हें पश्चात्ताप करना होगा।

अर्थात्, उन्हें परमेश्वर के लोगों के रूप में अपने दावों के साथ लगातार रहना चाहिए। उन्हें लगातार अपनी प्रतिष्ठा के साथ रहना चाहिए कि वे आध्यात्मिक रूप से जीवित हैं। अब, उनके लिए यीशु के शब्दों पर ध्यान दें।

यदि वे पश्चात्ताप नहीं करते, यदि वे नहीं जागते, तो यीशु कहते हैं, मैं चोर के रूप में आऊंगा और तुम्हें पता नहीं चलेगा कि तुम किस समय आ जाओगे। दिलचस्प बात यह है कि यह एक उदाहरण है, जहां लेखक ने पुराने नियम का हवाला नहीं दिया है, लेकिन संभवतः मैथ्यू 24 जैसे किसी पाठ से यीशु की शिक्षा को लिया है। मैथ्यू 24 और 25 में, जहां यीशु अपने दूसरे आगमन के बारे में सिखाते हैं, इसलिए- ओलिवेट प्रवचन या तथाकथित एस्केटोलॉजिकल प्रवचन कहा जाता है, यीशु के दृष्टांतों में से एक में, वह रात में एक चोर के आने की तुलना करता है।

और वह अपनी प्रजा, अपने चेलों को भी जागते रहने और जागते रहने की चेतावनी देता है। तो, सबसे अधिक संभावना है, यहां लेखक मैथ्यू 24 और 25 में अपने शिक्षण में यीशु के अपने अनुयायियों, अपने शिष्यों के लिए कहे गए सटीक शब्दों को याद कर रहा है। क्या जॉन के पास उस तक पहुंच थी या नहीं, यह मुद्दा नहीं है।

मुद्दा यह है कि जॉन को यीशु की शिक्षा के बारे में पता रहा होगा। अब, सरदीस में चर्च को संबोधित करते हुए यीशु मैथ्यू 24 और 25 से मिली शिक्षा का सहारा लेते हुए, चर्च को चेतावनी देते हैं कि यदि वे पश्चात्ताप नहीं करते हैं, और यदि वे अपने आध्यात्मिक मूर्खता से नहीं जागते हैं, तो यह जीवित रहने की उनकी प्रतिष्ठा है। , लेकिन वास्तव में मर चुके हैं, और शायद वे सरदीस में एक कम प्रोफ़ाइल बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं ताकि ध्यान और उत्पीड़न को आकर्षित न करें। यदि वे उससे नहीं जागे, तो यीशु चोर के रूप में आएंगे।

और उस व्यक्ति के स्थान पर जिसके पास वह आत्मा है जो उन्हें मृत्यु से बाहर निकालकर जीवन में लाने में सक्षम है, इसके बजाय, वह एक चोर के रूप में, अप्रत्याशित रूप से, उन लोगों के पास आएगा जो तैयार नहीं हैं। संभवतः यह उनके दूसरे आगमन का संदर्भ है। संभवतः ईसा मसीह के दूसरे आगमन का संदर्भ, जिसे हम बाद में अध्याय 19 और 20 में पाते हैं।

इसलिए, यदि वे नहीं जागते हैं, तो वे आने वाले मसीह का सामना करेंगे, उदाहरण के लिए, अध्याय 19 में, जो युद्ध करने और अपने दुश्मनों को हराने के लिए आता है। तो, सरदीस के चर्च में उन पर काबू पाने का क्या मतलब है? फिर, इसका मतलब समझौता करने से इंकार करना है। इसका मतलब है अपने वफादार गवाह को बनाए रखना, अपनी प्रतिष्ठा और अपने जीवित होने के दावों के साथ लगातार जीना, खासकर इस शत्रुतापूर्ण माहौल के बीच में।

अगले भाग में, हम देखेंगे कि सरदीस में चर्च को क्या वादे दिए गए हैं यदि वे सफल होते हैं।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर डॉ. डेव मैथ्यूसन का पाठ्यक्रम है। सत्र 6, सात चर्च: पेर्गमम, थुआतिरा, और सरदीस।

